'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 अंक 4 4 मई 2018 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

प्रधानमंत्री के नाम खुला पत्र

आदरणीय प्रधानमंत्रीजी!

सादर नमस्कार!

विगत दिनों राजस्थान में आपकी पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष को लेकर परोक्ष एवं प्रत्यक्ष रूप से आपकी पार्टी के राजस्थान प्रदेश पार्टी संगठन द्वारा राजपूत जाति के खिलाफ आपकी पार्टी के अंदरूनी सत्ता संघर्ष में अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को लेकर जो माहौल बनाया जा रहा है वह समाज के प्रत्येक व्यक्ति को पीड़ित करने वाला है। समाज का हर सामान्य व्यक्ति क्षोभ एवं पीड़ा व्यक्त कर रहा है। मान्यवर आपकी पार्टी का प्रदेशाध्यक्ष कौन बनता है यह आपकी पार्टी के संगठन का अंदरुनी मामला है और इसमें आपकी पार्टी के केन्द्रीय संगठन के सर्वाधिकार सुरिक्षत हैं लेकिन जैसा कि समाचार माध्यमों में प्रसारित हो रहा है कि आपकी पार्टी के राजस्थान प्रदेश के लोग प्रत्यक्ष एवं परोक्ष तर्क दे रहे हैं कि राजपूत को अध्यक्ष बनाने से अन्य जातियों के वोट कट जाएंगे, यह नितांत ही घटिया एवं शातिराना षड्यंत्र है और प्रत्येक राजपूत यह सोचता है कि यह राजपूत जाति के राजनीतिक अस्तित्व पर गंभीर चोट है। यह भारत के गौरवशाली अतीत में देश, धर्म एवं मान बिन्दुओं की रक्षा करने हेतु राजपूत जाति के अचिंत्य बलिदानों का अपमान है। मान्यवर आपको ज्ञात ही होगा कि आजादी के बाद पनपी राजनीतिक व्यवस्था में राजपूतों ने इस राष्ट्र में अनेक पदों को सुशोभित कर न्याय युक्त व्यवस्था दी है। आजादी के बाद पनपे नेतृत्व पर कभी जातीय पक्षपात करने का कोई गंभीर आरोप नहीं लगा। जाट व राजपूत जाति की सामान्य राजनीतिक प्रतिस्पर्धा को आधार बनाकर अपने स्वार्थों की पूर्ति करने वाली कुत्सित मानसिकता यह भूल गई कि नागौर, सीकर, झुंझुनूं, चुरू आदि स्थानों पर राजपूतों ने जाट जाति के सांसदों को थोक में वोट दिए हैं, अनेक जाट विधायक ऐसे हैं जिनको 90 प्रतिशत से अधिक राजपूत वोट मिले हैं। अनेक राजपूत विधायक ऐसे हैं जिनके विधानसभा क्षेत्र में नाम मात्र के राजपूत वोट हैं फिर भी वे लंबे समय से विधायक हैं। पाली जिले में पांच सामान्य प्रधान हैं और पांचों राजपूत हैं। अनेक ग्राम पंचायतें ऐसी हैं जहां लंबे समय तक निर्विरोध राजपूत सरपंच रहे हैं। देश के राष्ट्रपति से लेकर छोटे से छोटे जनप्रतिनिधि तक राजपूत रहे हैं, लेकिन आज तक इस प्रकार का कोई आरोप नहीं लगा जिस प्रकार की संभावना षड्यंत्रपूर्वक जताई जा रही है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में यदि हम लोग जातीय पक्षपात करते तो इतने लंबे समय तक जनता की चाहत बनकर नहीं रह पाते। मान्यवर आपकी पार्टी राष्ट्र, धर्म एवं सांस्कृतिक मानदंडों की बात करती है इसलिए स्वाभाविक रूप से राजपूत की पहली पसंद रही है। राजपूतों ने आपकी पार्टी के निर्माण काल से ही अपना तन, मन और धन इसको पनपाने में लगाया है। आपके केन्द्रीय संगठन ने कब, किसको क्या बनाया, इस पर समाज ने कभी कोई गंभीर प्रश्न नहीं उठाया बल्कि संगठन ने जिसको आगे किया समाज ने उसका सहयोग किया। यहां तक कि आपकी पार्टी के निर्माण से लेकर आज तक एक बार भी राजपूत को प्रदेशाध्यक्ष नहीं बनाया गया लेकिन हमने कभी ऐतराज नहीं जताया और वस्तुस्थिति यह है कि आज भी धरातल पर किसी भी जाति का एतराज नहीं है। राजस्थान में किसी भी सामाजिक संगठन या विभिन्न समाजों के सामाजिक नेताओं द्वारा या फिर आम राजस्थानी द्वारा इस प्रकार की कोई बात नहीं की जा रही लेकिन जिन लोगों के राजनीतिक स्वार्थ इस प्रकार की बातें करने से पूरे होते हैं वे कुछ लोग आपकी पार्टी के इस अन्दरुनी संघर्ष को राजपूत बनाम अन्य बनाकर अपनी राजनीतिक रोटियां सेक रहे हैं जो अक्षम्य है। संपूर्ण राजपूत समाज इससे व्यथित है और इस प्रकार के नीचता पूर्ण कृत्य की निंदा करता है एवं अपने आहत हृदय से आपसे निवेदन करता है कि आप अपनी पार्टी के इस प्रकार के लोगों को नियंत्रित करें अन्यथा समाज को अभियान चलाकर अन्य विकल्पों पर गंभीरतापूर्वक सोचना पड़ेगा।

निवेदक
राजपूत समाज

'शांति और समाधान के लिए सतत सत्संग'

हम हमारी समस्याओं के लिए राजनेताओं का मुंह ताकते हैं लेकिन वे कोई महापुरुष नहीं हैं जो हमारी समस्त समस्याओं का हल प्रस्तुत कर दें। हमारी सभी समस्याओं के समाधान एवं शांति के लिए महापुरुषों का सतत् सानिध्य एवं निरन्तर सत्संग ही एक मात्र उपाय है। इसी से हमें कर्मशील होने की प्रेरणा मिलेगी और सही दिशा में कर्मशीलता ही समस्याओं का अंत करती है। स्वामी अड़गड़ानंद जी के श्री बालाजी आश्रम में प्रवास के दौरान उनके साथ पधारे संघ प्रमुख श्री 14 अप्रेल को अल्पकालीन प्रवास के लिए नागौर पधारे एवं यहां की राजपूत कॉलोनी में एक स्वयंसेवक के आवास पर राजपूत परिवारों के मिलन में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि धर्मशास्त्रों में हमारे ही पूर्वजों के उपदेशों का, जीवन चरित्र का संग्रह है इसलिए प्रत्येक राजपूत को रामायण एवं गीता पढ़नी चाहिए। केवल मूंछों पर ताव देने से हम राजपूत नहीं बन सकते बल्कि शास्त्रानुकूल आचरण ही हमें राजपूत बना सकता है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'सामराऊ प्रकरण में प्राप्त सहयोग बाबत सूचना'

सामराऊ प्रकरण में श्री क्षत्रिय युवक संघ से संबद्ध क्षत्रिय सेवा संस्थान को प्राप्त सहयोग राशि में से विवाह के उपरांत 5,93,344 रुपए शेष रहे थे। उन्हें 31 मार्च से पहले उपयुक्त कार्य में खर्च करने का निर्णय हुआ था। इस हेतु वरिष्ठजनों के निर्देश पर तीन ऐसे राजपूत परिवारों का चयन किया गया जिनमें कमाने वाले पुरुष सदस्य का देहांत हो गया है एवं परिवार चलाने का दायित्व उस परिवार की विधवा महिला पर है। उन तीन परिवारों की दो-दो बालिकाओं के नाम शेष राशि 5,93,344 में 6656 रुपये मिलाकर एक-एक लाख रुपये की सावधि जमा (एफ.डी.) करवा दी गई है। तीनों परिवारों के खाते में दो-दो लाख (कुल 6 लाख) 31 मार्च से पहले जमा करवा दिए थे। उन्होंने अपनी सुविधा के बैंक में एफ डी बनवाकर उसकी फोटो प्रति भेज दी है जो संस्थान के कार्यालय में उपलब्ध है।

राजपूत शिक्षा कोष ट्रस्ट की बैठक संपन्न

राजपूत शिक्षा कोष ट्रस्ट की बैठक वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं पूर्व सांसद नारायणसिंह माणकलाव के निर्देशन में मारवाड़ राजपूत सभा में संपन्न हुई जिसमें राजपूत प्रतिभा खोज परीक्षा 2018 के बारे में चर्चा कर परीक्षा आयोजन की रुपरेखा तय की गई। इस परीक्षा हेतु एक लाख रुपए वार्षिक आय वाले परिवारों के राजपूत बालक पात्र होंगे।

परीक्षा हेतु पंजीयन 31 मई से पूर्व होगा एवं जून माह के द्वितीय रविवार को संभाग स्तरीय परीक्षा का आयोजन होगा। जोधपुर संभाग के जिलों में जिला स्तर पर परीक्षा आयोजित होगी जिससे संभाग स्तरीय मेरीट बनाई जाएगी। इस मेरीट में से कक्षा 6 में पांच व सातवी से नवमी तक दो-दो प्रतिभावान छात्रों का चयन किया जाएगा और इन 11 बच्चों को उनकी सुविधानुसार ट्रस्ट के खर्चे से 12वीं तक पढ़ाया जाएगा बशर्ते कि वे अपनी पढ़ाई का स्तर बरकरार रखें।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'गलत फहमियों को अवरोध न बनने दें'

हमने हमारे स्तर पर ही अनेक गलत फहमियां पाल रखी हैं और वे सभी आज हमारे आगे बढ़ने में बाधक बन रही हैं। हमने मान लिया कि बहुत पैसे वाला, शहर में रहने वाला या बहुत अच्छे शैक्षणिक इतिहास वाला व्यक्ति ही आज के प्रतियोगिता के दौर में सफल हो सकता है। हमारे आसपास के एक-दो नकारात्मक उदाहरणों ने हमारी इस धारणा को मजबूत बना दिया और हमने अपनी इन गलत फहमियों को हमारे आगे बढ़ने में अवरोधक बना लिया। झुंझुनूं के शार्दुल राजपूत छात्रावास परिसर में 15 अप्रेल को संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित युवा मार्गदर्शन एवं संवाद कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राजस्थान प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी महेन्द्र प्रताप सिंह गिराब ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने विभिन्न व्यक्तियों के उदाहरण देते हुए बताया कि विपरीत आर्थिक परिस्थितियां किस प्रकार व्यक्ति के आगे बढ़ने में उत्प्रेरक का काम करती हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

आज राजनीति और भाई भतीजावाद एक-दूसरे के पूरक बन चुके हैं। परिवार का एक सदस्य राजनीति में आता है तो पूरा परिवार उसको मिले अधिकारों या प्रभाव का अपने उपयोग के लिए इस्तेमाल करता है और वर्तमान में इसमें कुछ गलत भी नहीं माना जाता। लेकिन बिरले ही लोग होते हैं जो अपनी राजनीति को अपने परिवार की जागीर न मानकर सेवा का माध्यम ही मानते हैं। पूज्य तनसिंह जी ऐसे ही महामानव थे। उसके सांसद रहते हुए भी उनके पुत्र के निकर के पीछे कारी (पैबंद) लगा देखा जा सकता था। उन्होंने अपने राजनीतिक प्रभाव पर अपने परिवार को कभी हावी नहीं होने दिया। ऐसी ही एक घटना का यहां जिक्र किया जा रहा है। पूज्य श्री की बड़ी पुत्री बालु कंवर जी का विवाह मेवाड़ के रामपुरिया गांव के हरिसिंह जी के साथ हुआ जो आंखों के चिकित्सक थे। बात 1974-75 की है जब डॉ. हरिसिंह जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल में नैत्र चिकित्सा विभाग में चिकित्सक शिक्षक थे। उस समय राजस्थान के मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी थे जो पूज्य तनसिंह जी का विशेष मान रखते थे। जोधपुर में के.बी. में काम करने वाले एक स्वयंसेवक व्यवसाय के सिलसिले में जयपुर गए एवं रात्रि विश्राम डॉ. साहब के यहां किया। डॉ. साहब ने रवाना होते समय उनसे निवेदन किया कि वे उनका यह संदेश पूज्य तनसिंह जी तक पहुंचा देवें कि उनका स्थानांतरण दयपुर से बीकानेर हो गया है। यदि पूज्य श्री से स्वाभिमान को ठेस नहीं पहुंचे तो वे मुख्यमंत्री से निवेदन करें कि उन्हें बीकानेर की अपेक्षा उदयपुर भेज देवें ताकि वे अपने माता-पिता के साथ रह सकें। वे स्वयंसेवक जोधपुर आए और पूज्य नारायणसिंह जी रेड़ा को वह संदेश सुनाया। नारायणसिंह जी के निर्देश पर उन्होंने तनसिंह जी से निवेदन किया। पूज्य श्री का जवाब आज के राजनीतिज्ञों एवं उनके प्रभाव पर अधिकार जमाने वाले परिवारजनों के लिए एक नजीर है। उन्होंने कहा कि मैंने आपको अपनी पुत्री दी है इसलिए आपके लिए स्वाभिमान जैसा तो कोई विषय नहीं है लेकिन नौकरी में स्थानान्तरण एक प्रक्रिया गत हिस्सा है इसलिए नौकरी करनी है तो उसे सहज स्वीकार करें एवं सहज स्वीकार नहीं कर पाते तो इस्तीफा देकर घर आ जाएं। उन्होंने मुख्यमंत्री से नहीं कहा। बाद में किसी अन्य कारण से उनका स्थानान्तरण बीकानेर की अपेक्षा उदयपुर हो गया लेकिन पूज्य तनसिंह जी ने अपनी राजनीतिक हैसियत का इस प्रकार के व्यक्तिगत कार्यों में उपयोग करना उचित नहीं समझा। स्व. डॉ. साहब सदैव इस बात को लेकर गौरवान्वित होते थे कि ईश्वर ने उन्हें सिद्धान्तप्रिय राजनीतिज्ञ के जंवाई होने का अवसर प्रदान किया।

जीवनोपयोगी जानकारी-4

गणित विषय वर्ग : गणित विषय वर्ग, जिसमें भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान एवं गणित का समुच्चय सम्मिलित है, विद्यार्थियों के लिए अनेकों प्रतिष्ठित क्षेत्रों में कॅरियर निर्माण का अवसर उपलब्ध करवाता है। गणित विषय से 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नलिखित में से किसी एक डिग्री में प्रवेश ले सकते हैं :

1. बी.ई. (बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग)
2. बी. टेक (बैचलर ऑफ टेक्नोलॉजी)
3. बी.एस.सी. (बैचलर ऑफ साईन्स)
4. बी. आर्क (बैचलर ऑफ आर्किटेक्चर)
5. बी. प्लान (बैचलर ऑफ प्लानिंग)

उपरोक्त सभी कोर्स की अवधि चार वर्ष है तथा इनके पश्चात् दो वर्षीय स्नातकोत्तर (मास्टर्स) डिग्री प्राप्त करने का विकल्प भी उपलब्ध है। बी.ई., बी.टैक, बी. आर्क और बी. प्लान में प्रवेश का आधार संयुक्त प्रवेश परीक्षा (JEE) है जो भारत ही नहीं अपितु विश्व की सर्वाधिक चुनौती पूर्ण परीक्षाओं में से एक मानी जाती है।

JEE (संयुक्त प्रवेश परीक्षा) : यह भारत में इंजीनियरिंग कॉलेजों में प्रवेश हेतु प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली प्रवेश परीक्षा है, जिसने 2012 से AIEEE तथा IIT प्रवेश परीक्षाओं का स्थान लिया है। इसके अन्तर्गत दो परीक्षाएं आयोजित की जाती है (1) JEE Mains (2) JEE Advanced.

JEE Mains परीक्षा द्वारा राष्ट्रीय तकनीकी संस्थानों में प्रवेश मिलता है, जिन्हें NITs के नाम से जाना जाता है। इनके अतिरिक्त भारतीय सूचना तकनीकी संस्थान (IIITs) तथा (CFTIs) में भी JEE Mains के प्राप्तांकों के आधार पर प्रवेश मिलाता है।

JEE Mains परीक्षा में क्वालिफाई करने वाले विद्यार्थी ही JEE Advanced परीक्षा देने के लिए योग्य होते हैं। JEE Advanced में सफल विद्यार्थियों को भारतीय तकनीकी संस्थानों (IITs) में प्रवेश मिलता है। IISER तथा IIS जैसे कुछ संस्थान भी JEE Advanced के अंकों के आधार पर विद्यार्थियों को प्रवेश देते हैं।

JEE Main परीक्षा में दो प्रश्न-पत्र होते हैं। प्रथम प्रश्न पत्र के आधार पर बी.ई./बी.टैक में तथा द्वितीय प्रश्न-पत्र के आधार पर बी.आर्क एवं बी. प्लान में प्रवेश मिलता है।

इसके अतिरिक्त कुछ प्रतिष्ठित संस्थान अपने स्तर पर प्रवेश परीक्षाएं आयोजित करते हैं जैसे - बिट्स पिलानी में प्रवेश हेतु BITSAT, वैल्लोर तकनीकी संस्थान में प्रवेश हेतु VITEEE आदि। **(क्रमशः)**

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

भगवान श्री कृष्ण से जुड़े स्थान

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

भगवान श्री कृष्ण को भारत वर्ष में भिन्न-भिन्न स्थानों पर उनकी भगवत्ता के आधार पर बड़ी ही श्रद्धा से पूजा जाता है। राजस्थान के मेवाड़ सम्भाग के राजसमन्द जिले अन्तर्गत श्री नाथद्वारा में भगवान श्री कृष्ण का प्रसिद्ध मंदिर है। उदयपुर के महाराणा राजसिंह के समय मथुरा वृन्दावन से औरंगजेब जैसे आक्रान्ता शासक के कार्यकाल में भगवान की मूर्ति को लाकर यहां प्रतिष्ठित किया गया था। यह श्री वल्लभ सम्प्रदाय अथवा पुष्टिमार्गीय वैष्णवों का सबसे बड़ा द्वारा है। यहां की गौशाला में श्रीकृष्ण भगवान द्वारा चराई गई गायों का वंशज गौधन विद्यमान है। मथुरा से द्वारका आते-जाते भगवान श्री कृष्ण के रथ अबुर्दान्चल (माउंट आबू) की तलहटी में विश्राम (MID WAY) के लिए रुका करते थे। उन्हीं स्थानों पर श्री ऋषिकेश एवं श्री मधुआजी में उनके अति प्राचीन सुन्दर मन्दिर बने हुए हैं। मथुरा से भगवान अपनी राजधानी सुदुर अरब सागर के किनारे गुजरात के द्वारका लेकर गए। श्री कृष्ण का अन्तिम समय इसी क्षेत्र में बीता। प्रभु के प्रति अपनी तन्मयता के कारण द्वारकाधीश मंदिर की मूर्ति में भक्त शिरोमणि मीराबाई सशरीर समा गई थीं। उत्तराखण्ड का बद्रीनाथ धाम एवं आंध्रप्रदेश का तिरुपति बालाजी मंदिर विष्णु अवतार श्रीकृष्ण की ही प्रतिमूर्ति कहलाता है। लोक देवता रामदेव जी महाराज भगवान कृष्ण का ही अवतार थे। राजा अजमल जी तंवर ने द्वारका मंदिर में जाकर भगवान श्री कृष्ण से पुत्र प्राप्ति की इच्छा रखी थी। उन्हीं के वरदान से श्री रामदेव बाबा का जन्म हुआ। भगवान श्री कृष्ण की बाल्यकाल की लीला स्थली मथुरा, वृन्दावन, गौकुल नन्दगांव, बरसाना आदि तो आज भी अपने आप में अद्भुद है। श्रीकृष्ण का अवतरण काल लगभग साढ़े पांच हजार वर्ष पुराना माना जाता है। नन्द गांव और बरसाना दोनों पास-पास बसे हुए हैं। बरसाने की श्रीराधा थी और नन्द गांव के श्री कृष्ण। यहां के वाशिंदे बरसाना को आज भी कृष्ण का ससुराल मानते हैं। इनकी आस्था का आलम देखिए कि बरसाना की लड़की तब से आज तक नन्द गांव में ब्याही नहीं जाती। क्योंकि ये लोग सोचते हैं कि नया रिश्ता करने से पुराने रिश्ते को वे धीरे-धीरे भूल जाएंगे जिसे ये भुलाना नहीं चाहते। आज भी श्रीकृष्ण की उपस्थिति नन्द गांव में मानते हुए कुछ माताएं अपने घर के बाहर मक्खन की मटकी इस आशा से रखती हैं कि नन्द लाला आएंगे और मक्खन खाएंगे। बरसाने के प्रौढ़ व्यक्ति आज भी बाप-बेटी का रिश्ता मानते हुए नन्द गांव का अन्न जल ग्रहण नहीं करते क्योंकि बेटी के घर का बाप खाता-पीता नहीं है। उत्कल प्रदेश अर्थात उड़ीसा राज्य के पुरी में भगवान का भव्य मंदिर बंगाल की खाड़ी के किनारे अवस्थित है। इस जगन्नाथ पुरी मंदिर में श्रीकृष्ण अपने भाई बलराम व बहन सुभद्रा के साथ प्रतिष्ठित हैं। साल में एक बार भगवान की भव्य शोभायात्रा रथों पर निकलती है। ये भव्य रथ विशाल रूप से लड़की के बनाए जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि पुरी के महाराजा जब तक रथ के आगे सड़क पर झाड़ू लगाकर उसे नहीं खीचते तब तक ये भारी रथ आगे नहीं खिसकते। आजादी के बाद भी आज तक महाराजा द्वारा रथ खींचने की परम्परा बदस्तुर जारी है।

जगन्नाथ पुरी का मंदिर अपने आप में कई विलक्षणाताएं लिए हुए है। इसके शिखर पर विशाल ध्वजा लहराती है जो जिधर से हवा चलती है उसके समानान्तर न उड़कर विपरित दिशा में अथवा हवा के रुख के सामने फहराती है जो एक हैरान करने वाला सत्य है। मंदिर के ऊंचे शिखर पर भगवान का सुदर्शन चक्र बना है जो हर तरफ से देखने पर सामने ही नजर आता है। पक्षी मंदिर के ऊपर कभी भी नहीं बैठते है तथा ऊपर से भी कभी नहीं उड़ते। मंदिर के गुबन्द की छाया कभी भी पृथ्वी पर नहीं पड़ती। मंदिर के सिंहद्वार से अन्दर प्रविष्ट होने पर अन्दर समुद्र की लहरों की आवाज बिल्कुल सुनाई नहीं देती जबकि बाहर आते ही समुद्र की गरजना कानों में पड़ती है। मंदिर में सात बरतन एक दूसरे के ऊपर रखकर लकड़ी की भट्टियों में प्रसाद पकाया जाता है परन्तु चमत्कार कि सबसे ऊपर सातवें बरतन में रखा खाना पहले पकता है। अन्नपूर्णा का भण्डार भरपूर है यहां रोज लाखों लोग प्रसाद पाते हैं परन्तु भोजन कभी कम नहीं पड़ता है। यह अद्भुद चमत्कार एवं रहस्य है भगवान जगन्नाथ के पुरी मंदिर का।

चितरणी (जालोर) में शिविर संपन्न

जालोर के निकट रेवत गांव की सीमा में प्रसिद्ध संत केशरनाथ जी की तपोस्थली चितरणी में 23 से 26 अप्रेल तक प्रा.प्र.शि. संपन्न हुआ। मुंबई में व्यवसायरत प्रवासी स्वयंसेवकों के इस शिविर में उनके अलावा कुछ स्थानीय स्वयंसेवक भी शामिल हुए। शिविर में सांघिक प्रणाली से प्रशिक्षण के दौरान बताया गया कि संघ को यथारूप समझने के लिए हमें पूज्य तनसिंह जी द्वारा लिखित साहित्य को समझना चाहिए। संघ का अभियान किसी जाति विशेष का काम न होकर पूरे संसार में प्रकाश फैलाने का काम है जो क्षात्र धर्म के पुनरोदय से ही संभव है। इतिहास में जब-जब अंधकार ने, अन्याय ने व अधर्म ने अपना दायरा बढ़ाया, क्षात्र धर्म का पालन कर हमारे पूर्वजों ने प्रकाश फैलाया है। इसके लिए हमें संघ द्वारा बताए गए श्रेष्ठ बंधनों को स्वीकार करना पड़ेगा। उन बंधनों को स्वीकारने के लिए हमें अपने अंतर में संघर्ष को आमंत्रित करना पड़ेगा और संघ हमें उसी संघर्ष में प्रवृत्त करता है।

तल्लिनाथ शाखा पांचोटा का अभिनव प्रयोग

जालोर संभाग की तल्लिनाथ शाखा पांचोटा ने अभिनव प्रयोग करते हुए 13 से 20 अप्रेल तक 8 दिवसीय नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा तैयारी शिविर का आयोजन नागणेशी उच्च प्राथमिक विद्यालय पांचोटा में किया जिसमें पांचोटा, आकोरापादर, मंडला, थूंबा, धींगाणा के बालकों को प्रवेश परीक्षा की तैयारी करवाई गई। शाखा प्रमुख सौभाग्यसिंह पांचोटा के निर्देशन में हुए इस आवासीय शिविर में गणित, मानसिक योग्यता आदि विषयों का प्रवेश परीक्षा के पाठ्यक्रम अनुसार शिक्षण करवाया गया। सौभाग्यसिंह के अतिरिक्त वागसिंह पांचोटा भी आठ दिन तक इन बच्चों के साथ

रहे। नागणेशी विद्यालय के अध्यापक अभिमन्युसिंह, महिपालसिंह, गोवर्धनसिंह ने भी विद्यालय समय में इन बालकों को पढ़ाया। शिविर की पूरी दिनचर्या संघ के शिविर के अनुसार ही रही। श्री नागणेशी माता क्षत्रिय शिक्षण संस्था के अध्यक्ष शैतानसिंह आकोरापादर का भी पूर्ण सहयोग रहा।

सम्पर्क यात्रा के बाद शाखाएं शुरू

बनासकांठा प्रांत में विगत दिनों विभिन्न दलों द्वारा की गई सम्पर्क यात्रा के परिणाम स्वरूप नई व पुरानी शाखाएं प्रारम्भ हुई हैं। नारोली में संघ के दो उ.प्र.शि. सहित अनेक शिविर लग चुके हैं। वहां लंबे समय तक शाखा लगी। अभी सम्पर्क यात्रा के बाद वहां शाखा पुनः शुरू हुई एवं अरविन्दसिंह नारोली निरन्तर शाखा लगा रहे हैं। थराद के पीलूड़ा में सिद्धराजसिंह पीलुड़ा व नागेन्द्रसिंह पीलुड़ा ने शाखा प्रारम्भ की है। सुरजसिंह वातम के प्रयास से दियोदर तहसील के धनकवाड़ा में शाखा प्रारम्भ हुई है। दियोदर तहसील के ही चिभड़ा में भी शाखा प्रारम्भ हुई है। यहां गुमानसिंह चिभड़ा निरन्तर प्रयास कर रहे हैं। रणजीतसिंह लाखणी व जितेन्द्रसिंह लाखणी ने लाखणी में शाखा प्रारम्भ की है। यहां विगत वर्ष संघ प्रमुख श्री भी पधारे थे, यहां युवा टीम सक्रिय है।

'जाता हूं मैं शाखा में हर रोज'

जाता हूं मैं शाखा में हर रोज।
जहां पर बनती है क्षत्रिय बंधुओं की फौज।।1।।
होते हैं शाखा में अनेक खेल।
इन खेलों में होता है संघर्ष का मेल।।2।।
होती है शाखा में दैनिक आदर्शों की चर्चा।
शाखा में जाने का लगता नहीं कोई खर्चा।।3।।
होती है चर्चा में भावभरी मुलाकात।
तथा खेलों में होती है प्रेमभरी मुक्का-लात।।4।।
युगों-युगों तक चलता रहे यह संघ।
बहती रहे शाखा में आदर्शों की गंग।।5।।
पूज्य श्री तनसिंहजी की यह फुलवारी।
सदा विराजे इसमें खुशहाली।।6।।
संघ है श्रेष्ठ आदर्शों का भण्डार।
संघ में है श्रेष्ठ गुणों की भरमार।।7।।
मिला है संघ को मां भगवती का वरदान।
केशरिया ध्वज है राजपूती शान।।8।।

बघुवार : आदर्श गांव का उत्कृष्ट नमूना

कर्नल हिम्मतसिंह पीह

मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर जिले का बघुवार एक ऐसा गांव है जिसके वजूद को आधुनिक भारत की अरक्षणीय प्रथाएं न तो गर्त में डाल सकी और ना ही नष्ट कर सकी। फलता फूलता यह गांव ग्राम स्वराज का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है। गांव को देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी गुलशन का दीदार कर रहे हैं, चारों ओर हरियाली और चमचमाती सड़कें पसरी पड़ी हैं। इस गांव में आजादी के उपरान्त अभी तक सरपंच का चुनाव नहीं हुआ है। गांव के लोग सर्व सहमति से अपना ग्राम प्रधान चुनते हैं। गांव में विकास की नींव ग्राम प्रधान स्वर्गीय ठाकुर सुरेन्द्रसिंह ने रखी जिनको लोग आदर से भैयाजी कहते थे। वे ऐसी हस्ती थे जिनके उत्साह और दक्षता ने सभी को एक निश्चित दिशा में काम करने के लिए प्रेरित कर रखा था। गांव के विकास और गांव वालों के सामूहिक हित के लिए महत्त्वपूर्ण निर्णय सदैव उन्हीं के द्वारा लिए जाते थे। सन् 2012 में भैयाजी का निधन हो गया परन्तु गांव वाले अभी भी उनके सपनों को साकार करने में प्रयत्नशील हैं।

गांव में सफाई और जल संग्रहण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। लगभग 2000 की आबादी वाले इस गांव के हर घर में शौचालय है। सफाई कर्मियों द्वारा सदैव गांव की सफाई की जाती है। इस गांव के सीवर सिस्टम (मल जल निकास व्यवस्था) को अद्वितीय की श्रेणी में डाला जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। निकास व्यवस्था भूमिगत होने से कादे कीचड़ की शिकायत नहीं रहती है और गली कूचे स्वच्छ नजर आते हैं। जल निकासी की व्यवस्था इतनी सुदृढ़ है कि बारिश कितनी भी हो गांव में पानी कभी नहीं रुकता है। गांव पूरी रह मच्छर मुक्त है। जल संचय के लिए नालियों को कुओं से जोड़ा गया है जिनमें पानी इकट्ठा होता रहता है। पहले पानी की सतह 150 फीट नीचे थी जो अब 130 फीट ऊपर तक आ गई है। सतत् विकास के लिए संसाधन प्रबंधन बहुत आवश्यक है और यहां के युवाओं ने इसका भी एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। पहले यहां पर कोई सम्पर्क सड़क नहीं थी। गांव के लोगों ने मिलकर तीन किमी लंबी सड़क का निर्माण किया, बाद में सरकार की मदद से यह सीमेंट सड़क बना दी गई। गांव की धमनी नदी के पास तालाब बनाया गया है। गांव में बने सभी घरों की दीवारों पर सामान्य ज्ञान और इतिहास का उल्लेख है। गांव के विकास के लिए संघ बनाया गया है, जिसका सदस्य हर परिवार का एक व्यक्ति है। गांव के वे लोग जो बाहर नौकरी करते हैं, सेवानिवृत्ति के उपरान्त वापस अपने गांव लौट रहे हैं और गांव के विकास में अपना योगदान दे रहे हैं और अपना अनुभव साझा कर रहे हैं। पिछले 50 वर्षों से गांव में सुबह पांच बजे प्रभात फेरी निकाली जाती है। भजन-कीर्तन की गूंज से गांव जागता है। प्रभात फेरी में सभी जाति-धर्म के लोग शामिल होते हैं। इस हेतु गांव में रामायण मंडल नाम से एक मण्डली बनाई गई है। जात-पात के भेदभाव को मिटाने के लिए हरिजनों को गांव के बीच में हरिजन बस्ती के नाम से बसाया गया है। हरिजन बस्ती गांव की सबसे स्वच्छ और सुन्दर बस्ती है जहां गांव के लोग सुबह-शाम घूमने जाते हैं। हर बस्ती के बाहर प्रवेश द्वार है। ये ग्राम पंचायत ने अपने खर्चे से ही बनवाए हैं। गांव के किसान जैविक खेती ही करते हैं। जैविक खाद के लिए गांव में 20 गड्ढे बनाए गए हैं। गड्ढों में गांव का कचरा इकट्ठा किया जाता है, जिससे खाद बनाई जाती है। हर वर्ष खाद की नीलामी की जाती है। एक समुदाय की संचित ऊर्चा का अन्दाज इस बात से लगाया जा सकता है कि 2000 की जनसंख्या वाले बघुवार गांव में वर्तमान में 35 ट्रेक्टर्स, 51 गोबर गैस संयंत्र, गन्ना पिराई की 75 मशीनें, 25 हैण्डपंप और बहुत संख्या में थ्रेसर्स इस गांव में उपयोग के लिए उपलब्ध हैं। यहां उपलब्ध संसाधन इस गांव की जरूरतों से अधिक हैं जो इस गांव की सुदृढ़ आर्थिक स्थिति के परिचायक हैं।

गोबर गैस के मामले में यह गांव पूरे प्रदेश में सबसे आगे है। सभी घरों में गोबर गैस की मदद से खाना पकाया जाता है। यह गांव प्लास्टिक और पॉलिथीन से भी बचकर रहता है। 100 फीसदी वाटर हार्वेस्टिंग, मिनी इनडोर स्टेडियम और स्विमिंग पूल विकास की गाथा खुद-ब-खुद बया करते हैं। आमतौर पर लाल फीताशाही के भय से सरकारी योजनाओं के प्रति लोगों की सोच नकारात्मक रहती है, परन्तु यहां ऐसा नहीं है। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

संपादकीय

मूल स्वभाव और एकता के प्रयास

सभी महापुरुष, संत, महात्मा, धर्मशास्त्र कहते हैं कि मानव की या सृष्टि की दो मूल वृत्तियां हैं, दो स्वभाव हैं या दो संपदाएं हैं एक दैवीय वृत्ति या दैवीय संपदा और दूसरी आसूरी वृत्ति या आसूरी संपदा। प्रत्येक मानव में ये दोनों पाई जाती हैं और आपस में संघर्ष होता है। जब ये मानव में होती हैं तो मानवों के समूह में भी होती है। हर जाति, समाज और राष्ट्र में ये दोनों संपदाएं पाई जाती हैं। मानव विशेष में इनकी मात्रा न्यूनाधिक हो सकती है। आसूरी संपदा न्यून होने पर व्यक्ति देवताओं जैसा एवं दैवीय संपदा न्यून होने पर व्यक्ति असूरों जैसा व्यवहार करता है। साथ ही यह भी शास्त्र ही कहते हैं कि दोनों नदी के किनारों की तरह हैं जो कभी आपस में मिल नहीं सकते। इन दोनों में तो संघर्ष ही होता है। कोई भी व्यक्ति जिस प्रकार पूर्ण रूपेण दैवीय संपदा वाला नहीं होता और यदि ऐसा होता है तो वह मानव से महामानव, महान आत्मा या इससे आगे कहें तो परमात्मा हो जाता है। उसी प्रकार कोई भी समाज या जाति भी पूर्णरूपेण दैवीय संपदा वाले नहीं होते। यदि दैवीय संपदा की अधिकता वाले लोग अधिक होंगे तो जाति या समाज का चरित्र भी दैवीय संपदा वाला माना जाता है। लेकिन पूर्ण रूपेण कोई समाज दैवीय संपदा वाला नहीं होता। यदि हम इतिहास उठाकर देखें तो राम की सौतेली माता कैकयी आसुरी संपदा की शिकार हुईं। बाली जहां आसुरी संपदा के प्रभाव में था वहीं सुग्रीव दैवीय संपदा के। विभीषण दैवीय संपदा के प्रतीक हैं वहीं रावण आसूरी संपदा का। महाभारत काल देखें तो भगवान कृष्ण अपने आसूरी संपदा वाले मामा कंस का ही वध करते हैं। महाभारत तो एक ही परिवार के सदस्यों के बीच का संघर्ष है जहां एक पक्ष दैवीय संपदा का संवाहक है तो दूसरा आसूरी संपदा का। भगवान कृष्ण को सदैव अपने नाते रिश्तेदारों से ही संघर्ष करना पड़ा। शिशुपाल उनकी मौसी का बेटा भाई था। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि परिवार, समाज, जाति और राष्ट्र सब में दैवीय और आसूरी संपदा दोनों ही पाई जाती हैं। जब सब जगह ऐसा है तो हमारे समाज में भी ऐसी ही स्थिति है। ऐसे में यदि हम संपूर्ण समाज को एक करने का प्रयास करते हैं तो यह असंभव सा लगता है। विगत दिनों में एवं इससे पहले भी राजपूतों के सभी संगठनों को एक करने के प्रयास किए गए लेकिन वे सफल नहीं हो पाए और भविष्य में भी सफलता की संभावना शून्य ही है क्योंकि उनमें भी ये दोनों संपदाएं मौजूद हैं। ऐसे में संगठन उन्हीं लोगों का संभव है जिनके हृदय में समान संपदा क्रियाशील है। दैवीय संपदा के लोगों का संगठन आसानी से हो जाएगा और आसूरी संपदा की प्रधानता वाले लोगों का तो और भी आसानी से हो जाता है क्योंकि यह संपदा भोग के पीछे, प्राप्त करने के पीछे भागने वाली संपदा है और ऐसी ही प्राप्ति के लिए संगठित शक्ति की आवश्यकता उन्हें शीघ्र संगठित होने को प्रेरित करती है। इसी का परिणाम था कि कौरवों की सेना ग्यारह अक्षोहिणी थी और पांडव सेना सात अक्षोहिणी तक ही सीमित हो गई। आज भी ऐसा ही हो रहा है। आसुरी संपदा के लोग आसानी से संगठित हो जाते हैं, बस केवल आह्वान की आवश्यकता होती है। इसलिए दैवीय संपदा के धनी लोगों को इस बात से चिंतित नहीं होना चाहिए कि उनकी संख्या कम है या संगठन धीरे प्रसारित हो रहा है क्योंकि यह स्वाभाविक है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि पूरा समाज कभी भी संगठित नहीं हो सकता, एक नेतृत्व के नीचे नहीं आ सकता लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि इस प्रकार के प्रयास ही नहीं करने चाहिए। जिन उदाहरणों द्वारा हमें यह स्पष्ट हो रहा है कि दैवीय और आसूरी संपदा एक साथ नहीं आ सकती वे ही उदाहरण हमें एक और निर्देशन देते हैं। रावण और विभीषण एक होकर नहीं रह सके लेकिन फिर भी विभीषण ने रावण में दैवीय संपदा जागृत करने के प्रयास में कोई कमी नहीं रखी। भगवान राम ने आसूरी संपदा के नायक रावण को दैवीय संपदा की ओर प्रवाहित करने के लिए अनेक प्रयास किए। भगवान कृष्ण इस संबंध में हमारे लिए आदर्श नायक हैं जिन्होंने अंतिम समय तक युद्ध को टालने का प्रयास किया। दुर्योधन को समझाने स्वयं हस्तिनापुर गए जिससे उसकी दैवीय संपदा को जागृत किया जा सके। लेकिन सब प्रयास विफल हो गए तो भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कर्ण जैसे महामानवों का भी येन-केन प्रकारेण विनाश करने से नहीं सकुचाए। भगवान राम ने अंतिम प्रयास के रूप में अंगद को भेजने के पश्चात् पीछे मुड़कर नहीं देखा और इन सब उदाहरणों में हमने यह भी देखा कि उन्होंने उन आसूरी संपदा वाले मनुष्यों को या स्वजनों को दैवीय संपदा की ओर मोड़ने का ही प्रयास किया लेकिन इसमें किसी लेन-देन या समझौते की सहमति नहीं दी। उन्होंने ऐसा प्रस्ताव नहीं रखा कि तुम थोड़ा देवत्व अर्जित कर लो और हम थोड़े असुर बन जाते हैं। ऐसे में समाज संगठन हेतु काम करने वाले हम सब लोगों के लिए स्पष्ट निर्देश हैं कि हमें अंतिम समय तक समाज के सभी लोगों को दैवीय संपदा की ओर प्रवाहित करना चाहिए। लेकिन इसमें किसी प्रकार का मोह भी नहीं पालना चाहिए, क्योंकि ऐसा होना असंभव होने पर हमारा उन आसूरी प्रवृत्तियों से संघर्ष अवश्यभावी है और ऐसे संघर्ष में फिर यह नहीं देखा जाता कि सामने पितामह हैं या गुरु द्रोणाचार्य हैं। संसार में दान की प्रति मूर्ति कर्ण है या भाई के आदेश पर सर्वस्व न्यौछावर करने वाला दुशासन है। लेकिन उस अंतिम संघर्ष से पहले हर वह प्रयास किया जाना चाहिए जिससे हम हमारे देवत्व को बचाते हुए हमारे निकट संबंधियों को, हमारे समाज के लोगों को एक कर सकें, उनके आसूरी प्रवृत्तियों की ओर प्रवाह को देवत्व की ओर मोड़ सकें और यह प्रयास जीवन भर बिना थके, बिना हारे और बिना निराश हुए जारी रखना चाहिए जैसा भगवान श्रीकृष्ण ने दारूक के इस प्रश्न के उत्तर में कहा था कि आपका अवतार धर्म की स्थापना के लिए हुआ था और वह पूर्ण रूपेण हो नहीं पाया, ऐसे में हमारे लिए क्या आदेश है? तो भगवान का जवाब था कि जो मैंने किया वही तुम करो। अर्थात जीवन भर धर्म की स्थापना के लिए प्रयास करो। इस प्रकार सबको एक करना यदि श्रेष्ठ कार्य है तो हमें जीवन भर करना चाहिए लेकिन भगवान की तरह सभी बंधनों को तोड़कर संहार करना पड़े तो उसके लिए भी तैयार रहना चाहिए।

खरी-खरी

अराजकता केवल और केवल अराजकता ही है

देश प्रदेश में अनेक जगह विगत दिनों आंदोलनों के नाम पर अराजकता हुई है। चाहे वह अराजकता आरक्षण मुद्दे को लेकर राजस्थान में गुर्जरों ने की हो चाहे हरियाणा में जाटों ने की हो। चाहे वह अराजकता राजपूतों ने राजस्थान में आनंदपाल मुद्दे को लेकर की हो चाहे पद्मावती मुद्दे को लेकर देश के अन्य हिस्सों में की हो। चाहे वह अराजकता गुजरात में पटेलों ने की हो या महाराष्ट्र में मराठों ने की हो। चाहे वह अराजकता गुजरात के अनुसूचित जाति के लोगों ने की हो चाहे महाराष्ट्र के तथाकथित दलितों ने की हो। चाहे वह अराजकता दलित उत्पीड़न अधिनियम के बहाने दलितों ने पूरे देश में विभिन्न स्थानों पर की हो चाहे इसकी प्रतिक्रिया में बिहार या पंजाब में हुई हो। चाहे वह अराजकता विधानसभा घेराव के नाम पर होती हो चाहे भारत बंद के नाम पर होती हो। अराजकता अराजकता ही कहलाती है। हमारी अराजकता न्यायोचित एवं उनकी अराजकता व्यवस्था भंग करने वाली नहीं हो सकती बल्कि दोनों ही अराजकता व्यवस्था भंग करने वाली ही हैं अथवा उनकी अराजकता न्याय की मांग और हमारी अराजकता धौंस जमाना भी नहीं कही जा सकती। वास्तव में तो जो भी अराजकता आंदोलन के नाम पर भीड़ एकत्र कर की जाती है वह मूलतः धौंस जमाने के लिए ही होती है। न्याय की मांग करने वाले अराजकता का सहारा लेकर अन्याय पूर्ण कृत्य नहीं करते बल्कि न्यायोचित साधनों को अपना कर न्याय मांगते हैं। लेकिन देश की न्याय व्यवस्था के लचरपन का परिणाम है कि लोगों में न्यायोचित तरीकों से न्याय मांगने का धैर्य समाप्त होता जा रहा है और हर समस्या का समाधान सड़क पर नजर आने लगा है। सड़क पर समाधान पाने की भावना इतनी बलवती होती जा रही है कि जन सामान्य व्यवस्था में उपलब्ध समाधान के तरीकों को जानता भी नहीं है और वास्तव में तो जानना चाहता ही नहीं है। गली की बिजली खराब होने से लेकर संवैधानिक समस्याओं तक का इलाज व्यक्ति सड़क पर ही ढूंढ़ना चाहता है और उसका परिणाम ही अराजकता के रूप में प्रकट होता है। इन सब परिस्थितियों के लिए देश की प्रशासनिक व्यवस्था तो दोषी है ही साथ में राजनीतिक एवं सामाजिक नेता भी कम दोषी नहीं हैं। एक तो वे इस प्रकार की अराजकता के लिए उत्प्रेरक का काम करते हैं और दूसरा वे इस प्रकार की अराजकता को अराजकता की नजर से न देखकर अपनी सुविधा के अनुसार उसकी परिभाषा गढ़ते हैं। उनके लिए सुविधाजनक अराजकता को तो वे न्याय की मांग के रूप में परिभाषित करते हैं वहीं शेष को देश एवं प्रदेश के लिए घातक परिभाषित करते हैं। उनकी नजर में एक अराजकता दबे कुचले लोगों के क्रोध का प्रकटीकरण होती है वहीं दूसरी अराजकता प्रभावशाली लोगों की गुंडागर्दी या फिर एक अराजकता को व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश के रूप में परिभाषित करते है तो दूसरी को संविधान प्रदत्त अधिकारों का दुरुपयोग घोषित करते हैं। लेकिन वस्तुस्थिति यह है कि कोई भी व्यवस्था अराजकता को सही नहीं मान सकती चाहे वह वर्तमान संविधान की व्यवस्था हो चाहे संविधान से पहले की व्यवस्था हो। यदि हमें इस राष्ट्र में व्यवस्था का राज स्थापित करना है, शांति-समृद्धि और सुख को आमंत्रित करने वाली परिस्थितियां निर्मित करनी हैं तो ईमानदारी पूर्वक अराजकता को अराजकता ही कहना पड़ेगा। यदि ऐसा होगा तो हर प्रकार की अराजकता को नापसंद किया जाने लगेगा और व्यवस्था में ही व्यवस्था की कमियों को दूर करने का उपाय ढूंढ़ना शुरू हो जाएगा। अराजकता फैला कर धौंस जमाने की प्रवृत्ति को रोकने के लिए आवश्यक है कि अराजकता फैलाने वाले लोगों के प्रति किसी भी प्रकार की सहानुभूति न दिखाई जाए उन्हें पूरी ईमानदार से नकारा जाए। लेकिन ऐसा करने के लिए सही को सही और गलत को गलत कहने का जज्बा समाज के प्रभावशाली लोगों में होना आवश्यक है और ऐसा होगा तो स्वतः ही अराजक लोग अपनी करतूतों से बाज आएंगे अन्यथा देश जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत चरितार्थ हो जाएगी। क्योंकि आजकल लाठी उसी की होती है जो समान हितों के लिए संगठित होकर मतदान करता है और राजनीतिक पार्टियां उसके सभी नजरे उठाती हैं।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	उ.प्र.शि.	11.05.2018 से 21.05.2018 तक	भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम, गेहूं रोड, **बाड़मेर।** **नोट :** मेरी साधना, झनकार, निर्देशिका, यज्ञ विधि, यथार्थ गीता पुस्तकें साथ लेकर आएं।
2.	विशेष शिविर	22.05.2018 से 25.05.2018 तक	भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम, गेहूं रोड, **बाड़मेर।**
3.	प्रा.प्र.शि.	26.05.2018 से 29.05.2018 तक	श्री लक्ष्मण राजपूत छात्रावास **डूंगरपुर।** सम्पर्क सूत्र : 9602554818
4.	मा.प्र.शि. (बालिका)	28.05.2018 से 03.06.2018 तक	दादावाड़ी धाम, **बरमसर** जिला- जैससमेर। जैसलमेर से बीकानेर वाया देवा, मोहनगढ़ वाली बसें बरमसर होकर जाती है।
5.	प्रा.प्र.शि.	28.05.2018 से 31.05.2018 तक	**गेलाना,** तहसील सुवासरा, जिला-मंदसौर (मध्यप्रदेश)। सुवासरा उतर कर 12 किमी दूर कालेश्वर मंदिर परिसर गेलाना पहुंचे। **सम्पर्क सूत्र :** 9425978051, 9977800497, 9413641017
6.	प्रा.प्र.शि.	30.05.2018 से 02.06.2018 तक	**लांबापारडा** (बांसवाड़ा)। सम्पर्क सूत्र : 9983565520, 9587968610
7.	प्रा.प्र.शि.	03.06.2018 से 06.06.2018 तक	**कुणी** (प्रतापगढ़), सम्पर्क सूत्र : 9928051478
8.	प्रा.प्र.शि.	07.06.2018 से 10.06.2018 तक	आंतरी माताजी, **आंतरी** जिला नीमच (म.प्र.)। सम्पर्क सूत्र : 7357179555
9.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	07.06.2018 से 10.06.2018 तक	महाराणा प्रताप हॉस्टल, **गढी परतापुर,** बांसवाड़ा। बांसवाड़ा से डूंगरपुर जाने वाली बसें गढी परतापुर होकर जाती हैं। **सम्पर्क सूत्र :** 9783624223, 9983565520, 9587968610
10.	प्रा.प्र.शि.	11.06.2018 से 14.06.2018 तक	**बस्सी** (चित्तौड़गढ़), सम्पर्क सूत्र : 7357179555
11.	प्रा.प्र.शि.	15.06.2018 से 18.06.2018 तक	**हल्दीघाटी** (राजसमंद)। सम्पर्क सूत्र : 9829081971

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें। उच्च प्रशिक्षण शिविर में आने वाले मेरी साधना पुस्तक साथ लेकर आवे।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

कन्या छात्रावास का निर्माण प्रारम्भ

श्री कच्छ जिला राजपूत क्षत्रिय सभा द्वारा भुज में आधुनिक सुविधाओं से युक्त कन्या छात्रावास के निर्माण का कार्य शास्त्रोक्त विधि विधान से यज्ञ कर प्रारम्भ किया। इस अवसर पर कच्छ जिला राजपूत क्षत्रिय सभा के अध्यक्ष एवं कन्या केळवणी ट्रस्ट के अध्यक्ष वीरेन्द्रसिंह जड़ेजा (विधायक), प्रद्युम्न सिंह जड़ेजा (विधायक) सहित अनेक लोग उपस्थित थे।

गौतमसिंह मगरीवाड़ा का बहुमान

गुजरात न्यायिक सेवा में प्रथम रैंक के साथ चयनित गौतमसिंह मगरीवाड़ा का श्री क्षत्रिय शिक्षण सेवा संस्थान रेवदर द्वारा करोंटी स्थित बेडेश्वर मामाजी मंदिर में बहुमान किया गया। गौतमसिंह की उपलब्धि को पूरे समाज के लिए गौरव का विषय बताते हुए गोवर्धनसिंह पीथापुरा, मदनसिंह थल, भवानीसिंह भटाणा, भागीरथ सिंह लुणोल, गंगासिंह डांगराली, महिपालसिंह लुणोल, सुजानसिंह वडवज, गणपतसिंह निंबोडा, विक्रमसिंह मगरीवाड़ा आदि ने कार्यक्रम में संबोधन दिया।

पंचायत सशक्तिकरण पुरस्कार से सम्मानित

जैसलमेर जिले की कुंडा ग्राम पंचायत दीनदयाल पंचायत सशक्तिकरण पुरस्कार (मूल्यांकन वर्ष 2016-17) से प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित हुई है। सरपंच गोरधनसिंह कुंडा को 24 अप्रेल को राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस पर यह सम्मान दिया गया। जैसलमेर आने पर गोरधन सिंह का समाज बंधुओं द्वारा स्वागत किया गया।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

भजन किसका करें? - 4

महाकुम्भ के अवसर पर चण्डीद्वीप (हरिद्वार) में दिनांक 10.04.1983 ई. की जनसभा में परमपूज्य स्वामी श्री अड़गड़ानन्दजी का प्रवचन। 'भजन किसका करें' नामक छोटी सी पुस्तक में संग्रहित है। उसी पुस्तक को धारावाहिक रूप से यहां छापा जा रहा है। प्रस्तुत है गतांक से आगे का भाग।

(ज)

गोस्वामी तुलसीदासजी ने देवताओं का समर्थन कहीं नहीं किया। **'माया विवश बिचारे' (विनय पत्रिका)** वे माया से विवश हैं, बेचारे हैं। उनके पास चारा नहीं है तो आप क्यों जाते हैं उनके पास? देवता आपका इष्ट नहीं है।

(झ)

देवताओं का पराक्रम कितना है? गोस्वामी जी ने मानस में स्थान-स्थान पर चित्रित किया है :

रावण आवत सुनेऊ सकोहा। **देवन्ह तकेऊ मेरू गिरि खोहा।।** (1/181/6)

रावण को क्रोधित आते सुना भर था (लड़ना तो दूर, केवल सुना था कि क्रोधित होकर आ रहा है।) **'देवन्ह तकेऊ मेरू गिरि खोहा'** - देवता मेरू पर्वत की कन्दराओं में जाकर छिप गए। लेकिन देवियां कहां तक भागती? रावण ने उन सबको पुष्पक विमान में बैठा लिया।

देव यच्छ गंधर्व नर, किन्नर नाग कुमारि।
जीति बरी निज बाहुबल, बहु सुन्दर वर नारि।।
(1/182ख)

अपने भुजाओं के बल से इन सबको जीता, इनका वरण किया और निशाचरों में वितरित करके उन्हें देवलोक-जैसी सुख-भोग की व्यवस्था देकर सुखी किया। देवताओं ने सुना कि परिवार तो रावण के यहां कैद है तो बिना परिवार के अकेले जीकर के ही क्या करते? उन्हें छुड़ाने लंका पहुंच गए। रावण ने उन्हें भी सेवा-कार्य में नियुक्त कर लिया - **'कर जोरे सुर दिसिप विनीता। भृकुटि विलोकहिं सकल सभीता।।'** सभी हाथ जोड़कर विनीत भाव से खड़े रहते थे। भृकुटि देखते रहते थे कि कहीं उठने-बैठने में चूक न हो जाए, कहीं आदेश-पालन में देर न हो जाए, कहीं रावण नाराज न हो जाए।

रबि ससि पवन बरुन धनधारी।
अगिनि काल जम सब अधिकारी।। (1/181/10)

सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, यमराज, कुबेर और देवताओं के सभी अधिकारी रावण की आज्ञा का पालन करते थे, भयभीत रहते थे और प्रतिदिन उपस्थित होकर रावण के चरणों में नमन करते थे। जो पहुंच नहीं पाता था, वह घर से ही प्रार्थना कर लेता था कि कोई शिकायत न कर दे। यह तो देवताओं का अस्तित्व था, फिर भी हम पूजा करते हैं।

(ञ)

आइए उन प्रकरणों पर भी विचार करें, जिनमें देवताओं से सहायता की याचना की गई। हम देखने का प्रयास करें कि उन्होंने कौन-सी सहायता की? एक बार निशाचरों के आतंक से त्रस्त पृथ्वी गाय का रूप धारण कर देवताओं के पास गई कि मेरी रक्षा करो! उन्होंने उत्तर दिया कि हम तुम्हारे कष्ट निवारण में असमर्थ हैं। पृथ्वी के साथ सुर, मुनि, गन्धर्व सभी देवताओं के पितामह ब्रह्मा के पास पहुंचे। ब्रह्मा ने सब जान लिया कि ये क्यों आए हैं। मन में अनुमान लगाया कि मेरा भी तो कोई वश नहीं है। बोले- जिसकी तू दासी है, वे अविनाशी हैं- उनका कभी विवाश नहीं होता। वे अजर, अमर, शाश्वत और अमृत स्वरूप हैं- उन्हीं की प्रार्थना करो। वे ही तुम्हारे-हमारे सभी के सहायक हैं।

समस्या थी, उन परमात्मा को ढूंढ़ा कहां जाए? **'पुर बैकुण्ठ जान कह कोई। कोउ कह पयनिधि बस प्रभु सोई।।'** (1/184/2) कोई देवता उन्हें बैकुण्ठ चलने के लिए प्रेरित कर रहा था, तो कोई कह रहा था कि क्षीर सागर में भगवान रहते हैं। उसी समाज में शंकरजी भी थे, किन्तु उन्हें बोलने का अवसर ही नहीं मिल पा रहा था। किसी प्रकार एक वचन कहने भर के लिए अवसर मिला, **'अवसर पाइ वचन एक कहेऊं'**- तो वे बोले :

हरि ब्यापक सर्वत्र समाना।
प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना।। (1/184/5)
अग जगमय सब रहित बिरागी।
प्रेम तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी।। (1/184/7)

भगवान शंकर ने अपना जाना हुआ उपाय बताया कि भगवान कण-कण में समान रूप से व्याप्त हैं. सम्पूर्ण हृदय से मन को समेटकर उनके चरणों में लगा दो, वे तुरन्त प्रकट हो जाएंगे। उनका मत सबको स्वीकार हो गया। ब्रह्मा भी समर्थन दिया। उस विधि से स्तवन होते ही आकाशवाणी हुई कि तुम लोगों का दुःख हम दूर करेंगे।

इन समस्त प्रकरणों में देवताओं ने कौन-सा निर्णय दिया और कौन-सी सहायता की? जिनको यह भी ज्ञात नहीं है कि भगवान का चिन्तन किस प्रकार किया जाता है, वे आपका कौन-सा मार्गदर्शन करेंगे? परम कल्याण का रास्ता जिनको मालूम नहीं है, भला वे कल्याण क्या करेंगे।

दोष किसका? फिर भी हम उसी का पीछा करते हैं। कितनी बड़ी जड़ता है। इस जड़ता का स्रोत क्या है? इसमें किसका दोष है? क्या हमारा दोष है? नहीं, हमारा भी कोई दोष नहीं है। यह हमको विरासत में मिली रीति है। बाल्यकाल से ही माताओं को, पास-पड़ोस को, भाई-बन्धुओं को कुछ-न-कुछ पूजा-पाठ करते हुए देखते हैं। बचपन से ही हमारे मन-मस्तिष्क में उस पूजा-पद्धति की अमिट छाप पड़ जाती है, इसीलिए लाख समझाने पर भी हम समझ नहीं पाते। समझना नहीं चाहते। प्रायः माताएं अबोध बच्चों को धूप-अगरबत्ती इत्यादि जलाकर कभी पीपल के नीचे, कभी कहीं बैठा देती हैं। कहती हैं - 'हाथ जोड़ लें! यह बरम बाबा हैं, यह ग्राम-देवी हैं। इनको इस तरह से प्रणाम कर।' बालक उसी को पकड़ लेता है। बालक के कोमल, निर्मल चित्त पर आरम्भिक वर्षों के वे संस्कार आजीवन उसका पिण्ड नहीं छोड़ते। बचपन में जो बच्चा भयभीत हो जाता है, वह जीवनपर्यन्त भयभीत ही रहता है। एकान्त, अंधेरे में जाते डरता है। पत्ते तक से भी भय खाता है। दस-पन्द्रह देवी-देवता तो उसे बचपन से ही पकड़ा दिए जाते हैं। समय आने पर कदाचित वह छोड़ भी दे, तब भी कुछ-न-कुछ शंकालु बना ही रहेगा। अतः माता-पिता लोगों से मेरा निवेदन है कि वे अपने बच्चों का भविष्य अन्धकारमय न बनावें।

(ट)

ठीक इसी प्रकार माता सीताजी को भी देवी-देवताओं की पूजा विरासत में मिली थी- **'गिरिजा पूजन जननि पठाई।' (1/227/2)** सीता वहां आती-जाती थीं। स्वयंवर का आयोजन चल रहा था। एक दिन सीताजी गिरिजा का पूजन करके लौट रही थीं कि उसी वाटिका में राम दृष्टि में छा गए। पूजन करके लौट रही थीं, किन्तु पुनः गिरिजा के पास गईं, हाथ जोड़कर बोली, **'मां, आज तक जो हमने आपकी सेवा की, उससे प्रसन्न होकर यही सांवला वर देने की कृपा करें।'**

पार्वतीजी ने अपनी ओर से कोई आशीर्वाद नहीं दिया। आवाज आई- **'नारद वचन सदा सुचि साचा। सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राचा।' (1/135/8)** देवर्षि नारद जो गुरु थे, उनका वचन सत्य है, निर्दोष है। वही वर तुम्हें मिलेगा जिसमें तुम्हारा मन रमा है। देवर्षि नारद ने जो कभी सीता से कहा था, पार्वती ने मात्र उसी की स्मृति दिला दी। सीता आश्वस्त हुईं।

धनुष-यज्ञ की स्थली पर पहुंचकर जब सीता ने उस विशाल धनुष पर दृष्टिपात् किया, जिसे तोड़ने में दस हजार राजा असफल रहे, तो वे अधीर हो उठीं कि ये सुकुमार इसे कैसे तोड़ पाएंगे? देवी-देवताओं को मनाने लगीं :

तब रामहि बिलोकि बैदेही।
सभय हृदयं बिनवति जेहि तेही।। (1/256/4)

जो भी उन्हें याद आया, छोटे से लेकर बड़े तक, सबकी प्रार्थना करने लगीं। जैसे- **'होहु प्रसन्न महेस भवानी।' (1/256/5)**- शंकरजी को मनाने लगीं, उनको छोड़कर भवानी को मनाने लगीं, जिनसे वरदान मांगा था। वहां भी स्थिर न रह सकीं- **'गननायक वरदायक देवा। आजु लगें कीन्हिउं तुअ सेवा।' (1/256/7)**- आज तक आपकी भी बड़ी सेवा की है। आप ही ध्यान दें। हमारी विनय सुनें और चाप को हल्का कर दें। उन्हें भी छोड़ दिया। **'सुर मनाव धरि धीर' (1/257)**- देवताओं को मनाने लगीं। धनुष तक की प्रार्थना करने लगीं कि कोई नहीं सुन रहा है। अब तो चाप! आपका ही भरोसा है, आप स्वयं हल्के हो जाइए, किन्तु अभी से हल्के न हो जाइएगा अन्यथा कोई भी तोड़ देगा। राम को आता देखकर ही हल्का होइएगा।

कहीं भी सफलता न देखकर सीताजी ने सारे देवी-देवताओं से चित्त हटाकर एक परमात्मा में श्रद्धा स्थित किया- उस परमात्मा में, जो सबके हृदय में रहता है।

तन-मन वचन मोर पनु साचा।
रघुपति पद सरोज चितु राचा।।
तो भगवान सकल उरबासी।
करिहि मोहि रघुबर कै दासी।। (1/258/405)

यदि मन-क्रम-वचन से मेरा प्रेम सच्चा है और राम के चरण-कमलों में निवास करता है, वह भगवान हमें राम की दासी बना दें। हृदयस्थ एक परमात्मा में श्रद्धा स्थिर होते ही **'कृपा निधान राम सबु जाना।' (1/258/7)**- उन अन्तर्यामी ने जान लिया कि अब सच्चे स्थान पर पूजा कर रही है। इसके उपरान्त ही किसी देवी-देवता के पास जाना नहीं पड़ा सीता को- **'तेहि छन राम मध्य धनु तोरा।' (1/260/8)** राम ने धनुष तोड़ दिया। सीता को सफलता मिली। अस्तु, हम जो विविध पूजाएं करते हैं, वह विरासत में मिली हैं, लेकिन सफलता तभी मिलेगी जब एक परमात्मा में श्रद्धा स्थिर होगी। **(क्रमशः)**

हमारा गिरता स्तर

अखबार में पढ़ा कि एक 11 वर्ष की बच्ची से साहिबाबाद के एक मदरसे में वहां के मौलवी व उसके साथी ने बलात्कार किया। बलात्कार , भ्रष्टाचार की खबरें सुनना अब जैसे आम सा हो गया है, प्रतिदिन अखबार में ऐसी 2-3 खबरें होती हैं इसलिए संवेदनाएं भी उतनी नहीं रही लेकिन जब देश के राष्ट्रीय अखबारों में पढ़ा कि एक मंदिर में बलात्कार हुआ है। जब पढ़ा 8 वर्ष की बच्ची से पुजारी ने बलात्कार किया है तब अन्दर तक सहम गया था मैं। उसी समय देश के राष्ट्रीय अखबारों में पढ़ा उत्तर प्रदेश के एक विधायक पर बलात्कार का आरोप है और योगी सरकार कुछ कर नहीं रही है। तब तो मैं कितना गुस्से से भर गया था बयां नहीं कर सकता और मैंने दोनों बलात्कारों पर अखबारों के माध्यम से मिली सूचना के आधार पर लेख लिखे। चूंकि मेरे लिए यह सहन कर पाना संभव नहीं था कि राम मन्दिर की पैरवी करने वाले मन्दिर में बलात्कार का समर्थन कैसे कर सकते हैं। मेरे लिए यह सहन कर पाना भी संभव नहीं था कि केवल मात्र आरोपी विधायक योगी जी की पार्टी व योगी जी की जाति का होने के कारण उस पर कार्यवाही नहीं की जा रही। इसलिए मैंने योगी जी के योग, योगी जी के क्षत्रियत्व को लताड़ते हुए और भाजपा के हिंदूत्व को लताड़ते हुए लेख लिखे लेकिन जब कुछ समय बाद पता चला कि दोनों ही मामले थे कुछ ओर ही जबकि हमें दिखाए व बताए गए कुछ ओर ही। सब कुछ मीडिया के नरेटिव अनुसार था तो यूं लगता है जैसे अपने अन्दर नैतिकता जैसा कुछ बचा ही ना हो। राजनीति व धर्म के चश्मों के तहत सच्चाई, न्याय व नैतिकता का कचरा करते जा रहे हैं हम लोग। अब समझ नहीं आता किस न्यूज को सच मानें और किस न्यूज को झूठ। जब मीडिया सच नहीं दिखाएगा तो सच लोगों तक पहुंचेगा कैसे। मीडिया कितना सच दिखाता है हमें, इसका अनुमान इसी से लगा लो कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हमारा मीडिया पिछले वर्ष की तुलना 3 अंक नीचे गिरकर 138 वें स्थान पर पहुंच गया है। आज पढ़ रहा हूं कि एक मदरसे में 11 वर्ष की बच्ची से बलात्कार हुआ है। ना जाने कितनी सच्चाई है इस मामले में भी लेकिन इस बात में कोई झूठ नहीं कि मेरे देश में बलात्कार हो रहे हैं। बलात्कारों पर राजनीति हो रही है । इसमें भी कोई झूठ नहीं है कि बलात्कार जातिगत व धार्मिक हो रहे हैं। बलात्कार के विरूद्ध कानून बन रहे हैं लेकिन इसमें भी कोई झूठ नहीं कि उन कानूनों का धड़ल्ले से दुरूपयोग हो रहा है। शायद इसीलिए संवेदनाएं भी कम होती जा रही है। हमें समझना होगा कि बलात्कार, सामूहिक बलात्कार, 5-7 साल की बच्ची से बलात्कार, जाति-धर्म के आधार पर बलात्कार, ये घृणित कार्य कानूनों के निर्माण से नहीं इंसानों के निर्माण से रुकेंगे। हम शिक्षित होते जा रहे हैं लेकिन आवश्यकता सभ्य होने की है। हम धार्मिक होते जा रहें हैं लेकिन देश में कृत्य सारे अधार्मिक हो रहे हैं। इसलिए आवश्यकता धार्मिक कट्टरता की नहीं आवश्यकता धर्म के मूल को समझने की है । सारांश में कहूं तो घर की स्वच्छता जितनी आवश्यक है अन्तर्मन की शुद्धता भी उतनी आवश्यक है या यूं कहूं उससे कहीं ज्यादा आवश्यक है। इसलिए गीता या आसिफा के मामले में मोमबतियां जलाने से अधिक आवश्यकता है मूल समस्याओं की ओर ध्यान देने की और मूल समस्याओं के समाधान में भारतीय मीडिया एक बहुत बड़ी समस्या बनती जा रही है।

पत्रकार नहीं चाटुकार बनने लगे हैं अब अनुदान से।
इसलिए हम गिरते जा रहे हैं पत्रकारिता के पायदान से ।।

कुंवर अवधेश शेखावत 'धमोरा'

सोशल मीडिया पर भटकता युवा

विरम सिंह सुरावा

आजकल सोशल मीडिया समाज में गहरी जड़ें जमा रहा है। हर व्यक्ति इस आभासी दुनिया के मायाजाल में फंसता ही जा रहा है। प्रत्येक जाति, लिंग, वर्ग, धर्म के लोग और यहां तक की कई बच्चे भी इस आभासी दुनिया में जी रहे हैं। आज सामाजिक होने का मतलब केवल सोशल साइट्स पर उपस्थित होना ही रह गया है। लेकिन फेसबुक पर पांच हजार मित्रों, whatsapp पर सैकड़ों समूहों और Instagram पर हजारों फोलोवर्स वाला व्यक्ति अपने पड़ोस में कौन रहता है, उसके बारे में नहीं जानता। जिस सोशल मीडिया का उपयोग अपने ज्ञान को बढ़ाने, नई जानकारी प्राप्त करने, अपनी बात लोगों तक पहुंचाने में और सामाजिक एकता बढ़ाने में करना चाहिए था उसका उपयोग सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने में किया जा रहा है और यह सब विवेकहीन होकर एक दुसरे की हां में हां मिलाने से हो रहा है। फेसबुक पर किसी व्यक्ति विशेष या समाज को अपशब्द कहना और एक दूसरे पर आरोप लगाना आम बात हो गई है। इस पुरे मायाजाल से हमारा समाज भी अछूता नहीं है। टेक्नोलॉजी का उपयोग करना और संसार के साथ चलना तो ठीक है लेकिन दुनिया कहां जा रही है इसको जाने बिना पीछे-पीछे चलना कतई सही नहीं कहा जा सकता। आमतौर पर हम देखते हैं कि कोई व्यक्ति कुछ भी लिख कर फेसबुक और whatsapp पर डाल देता है। फिर सभी युवा उस पोस्ट की हकीकत को जाने बिना भेड़ चाल चलते हुए पोस्ट को कॉपी पेस्ट करके आगे से आगे भेजते रहते हैं।

मामले की वास्तविकता को जाने बिना ही समाज के नेताओं और दूसरे समाज पर तत्काल कमेंट्स करना शुरू कर देते हैं जिससे जो मामला आसानी से हल किया जा सकता था उसे और पेचीदा बना देते हैं। यह बात सही है कि वर्तमान में हुए आंदोलनों को आगे लाने में सोशल मीडिया का बहुत योगदान है लेकिन बिना सोचे समझे पोस्ट और कमेंट्स करने से मामला बिगड़ा भी है। यह भी देखने में आता है कि कोई व्यक्ति कहीं से भी फोटो या वीडियो उठा कर समाज के नाम से फेसबुक पर डाल देता है, वास्तव में उसका समाज से कोई लेना-देना नहीं होता। फिर सभी युवा उस पर बहस करने लग जाते हैं। सबसे बड़ी विडम्बना तो यह है युवाओं के टारगेट समाज के नेता और सामाजिक संगठन होते हैं। कई युवा तथाकथित समाज सेवक बन कर सामाजिक संगठनो की कमियां निकालना शुरू कर देते हैं। जिससे समाज के युवा भ्रमित होने लगते हैं और संगठनों से दूर होते जाते हैं। समाज और संगठनों से जुड़े मामलों का हल साथ मिलकर बैठने से होगा न की सोशल मीडिया पर आरोप-प्रत्यारोप करने से। बल्कि ऐसा करने से दूसरे समाज के लोग फर्जी अकाउंट बनाकर आग में घी डालने का काम करते हैं। तथाकथित समाज के नेता फेसबुक पर लाइव आकर या whatsapp पर भड़कीले वीडियो डालकर युवाओं को भड़काने की कोशिश करते हैं। उस सबके पीछे उनका स्वार्थ छिपा होता है लेकिन रण मतवाले बांकुरे इसको समझ नहीं पाते और जोश-जोश में कूद जाते हैं फिर जब अंत में हकीकत का पता चलता है तो कई युवा उन सामाजिक संगठनो से भी किनारा कर लेते हैं जो वास्तव में धरातल पर काम कर रहे होते हैं। इस प्रकार से जो युवा समाज और देश के काम आ सकते हैं उनको पहले ही रास्ते से भटका दिया जाता है जिससे उनका कॅरियर भी डावांडोल हो जाता है। इसलिए जो भी युवा सोशल मीडिया से जुड़े हैं या जुड़ने वाले हैं वो यह बात अच्छे से जान लें कि बिना किसी बात की पूरी जानकारी प्राप्त किए तुरंत रिएक्शन देना सही नहीं होता और फिर फेसबुक पर 'जय हो' 'जय हो' करने की बजाय वास्तविक जीवन में समाज के हित में काम करे। जिससे समाज की भी सेवा हो और आप भी अपने भविष्य को गलत राह पर जाने से रोक सकें।

(पृष्ठ एक का शेष)

शांति और...

संघ प्रमुख श्री ने कहा कि संघ समाज की सेवा के लिए है। समाज संघ के लिए नहीं है और केवल नारों से कोई संस्था मजबूत नहीं बनती बल्कि उसके लिए सतत् साधना की आवश्यकता होती है। ठहरा हुआ पानी सड़ांध मारता है इसलिए विचारों की मजबूती एवं विस्तार के लिए निरन्तर कर्मशील होना आवश्यक है। हमारे भीतर विगत 5000 वर्षों से विकृतियां प्रवेश कर रही हैं उन्हें इतनी आसानी से नहीं निकाला जा सकता बल्कि उसके लिए धैर्यपूर्वक निरन्तर कर्मरत रहना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि गीता कहती है कि अपने आपको इतना निर्मल बनाओ कि प्रत्येक प्राणी आप से प्रसन्न हो लेकिन यह काम इतना सरल नहीं है। आज हम देश में स्वतंत्रता की बात करते हैं लेकिन जब पूरी व्यवस्था विदेशी है, समस्त नीतियां विदेशी हैं तो फिर स्वतंत्रता कैसी? इसलिए गीता को राष्ट्रीय ग्रंथ बनाकर उसके आलोक में भारतीयता से परिपूर्ण व्यवस्था लागू होनी चाहिए तब ही असली आजादी फलीभूत होगी।

राजपूत शिक्षा...

इसके अलावा निजी विद्यालयों से सम्पर्क कर उन्हें संभाग स्तर पर आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के 100 राजपूत विद्यार्थियों को निःशुल्क पढ़ाने के लिए तैयार किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि विगत वर्षों में नारायणसिंह माणकलाव एवं उनकी टीम द्वारा चौपासनी स्कूल के पूर्व विद्यार्थियों के सहयोग से एक शिक्षा कोष के गठन का प्रयास चल रहा है जिसमें 10 करोड़ रुपए का कोष बनाकर उसके ब्याज से शिक्षा के प्रसार हेतु इस प्रकार के प्रयास किए जाएंगे। ट्रस्ट द्वारा समाज के प्रत्येक व्यक्ति से न्यूनतम 100 रुपए से प्रारम्भ कर यथाशक्ति सहयोग करने की अपील की जा रही है।

गलत फहमियों...

साथ ही उन्होंने विगत वर्षों में राजस्थान प्रशासनिक सेवा सहित अन्य नौकरियों में चयनित हुए ग्रामीण पृष्ठ भूमि के युवाओं के उदाहरण देते हुए बताया कि हमारा संकल्प मजबूत हो तो सब संभव है। उन्होंने स्कूली शिक्षा एवं कॉलेज के दौरान अनुर्तीण या पूरक परीक्षा दे चुके अनेक लोगों के उदाहरण बताए जो आज अधिकारी हैं। इसलिए संकल्प और तद्नुकुल प्रयास ही सफलता की कुंजी है। ऐसा करने से बचने के लिए ही हम गलत फहमियों के सहारे ढूंढ़ते हैं। इसलिए यदि आगे बढ़ना है तो अपने आसपास की सभी गलत फहमियों को छोड़ते हुए हमें संकल्प पूर्वक कर्मशील होना पड़ेगा। अपने उद्बोधन में महेन्द्र प्रताप सिंह ने दसवीं के बाद से लेकर आगे तक के अवसरों की जानकारी दी। राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता यशवर्धनसिंह झेरली ने कहा कि लड़ाई आज भी जारी है लेकिन अब तरीका बदल गया है। इस तरीके में कम जोश के साथ भी निरन्तर क्रियाशील रहकर हम अधिक परिणाम हासिल कर सकते हैं। आज जिस प्रकार भारतीय सेना का सम्मान है वैसे ही संरक्षण करने पर हमारा भी सम्मान था। आज भी हमें अपने आपको हमारे पूर्वजों द्वारा रक्षित राष्ट्र का संरक्षक मानकर व्यवस्था में उपलब्ध तरीकों द्वारा उसका संरक्षण करना चाहिए। आज की व्यवस्था में हमें सूचना का अधिकार, विभिन्न प्रकार के शिकायत निवारण तंत्र यथा जनसम्पर्क पोर्टल आदि, न्यायालय आदि साधन उपलब्ध हैं, इनकी उचित जानकारी प्राप्त कर हमें राष्ट्र की संपदा का संरक्षण करना चाहिए। उन्होंने कहा कि व्यवस्था को जीतने के लिए व्यवस्था को समझना पड़ेगा। तिजोरी को हथोड़े से नहीं खोला जाता बल्कि चाबी से खोला जाता है। हम कमजोर नहीं है लेकिन व्यवस्था को अस्वीकार करने के भाव के कारण निराशा आई है जिससे दूर होने के लिए इसे नकारना पड़ेगा। व्यवस्था की यथोचित जानकारी होने पर हम एक चुने हुए प्रतिनिधि जितना काम कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि 25 वर्ष की उम्र तक अपने आपको बनाना ही समाज का कार्य है। अध्ययन द्वारा अपने कॅरियर को बनाए एवं व्यक्तिव में निखार हेतु श्री क्षत्रिय युवक संघ से जुड़ें। यह कर लेगें तो 25 वर्ष बाद समाज के लिए उपयोगी बन पाएंगे अन्यथा सामाजिक कार्य के नाम पर आंदोलनों का हिस्सा बनकर अपने जीवन को खराब कर लेंगे। दोनों उद्बोधन के बाद संवाद का सत्र चला जिसमें उपस्थित संभागीयों ने विभिन्न प्रश्न पूछकर अपनी शंकाओं का समाधान किया। प्रश्नोत्तर के दौरान सरकारी व्यवस्था एवं कॉरियर संबंधी अनेक जानकारी दी गई। कार्यक्रम के प्रारम्भ में श्री क्षत्रिय युवक संघ की जानकारी दी गई।

(पृष्ठ तीन का शेष)

बघुवार...

बघुवार निवासी सरकारी योजनाओं और अनुदान के बारे में पूर्ण जानकारी रखते हैं और इनका पूरा फायदा भी उठाते हैं। यह गांव निर्मल ग्राम घोषित किया जा चुका है और 2012 में इसे राष्ट्रपति ने पुरस्कृत किया था। इस गांव की उपलब्धियों को मध्य नजर रखते हुए माया विश्वकर्मा ने 'बघुवार : स्वराज मुमकिन' शीर्षक की एक पुस्तक लिखी जिसका लोकार्पण अप्रेल 2016 को हुआ था। इसी भावना से प्रेरित होकर वरिष्ठ पत्रकार और फिल्म मेकर पंकज शुक्ला ने एक डाक्यूमेन्ट्री फिल्म 'स्वराज मुमकिन है' बनाकर इसका प्रदर्शन 7 अगस्त 16 को सिलिकॉन वैली के शहर सेन जोस के फेस्टिवल ऑफ ग्लोब में किया। स्व. ठाकुर सुरेन्द्र का सपना उस दिन से देश और विदेश में जाना जाने लगा है। स्व. ठाकुर सुरेन्द्र सिंह के निधन के बाद उन्हीं के अनुज ठाकुर नरेन्द्रसिंह ने अपने ज्येष्ठ भ्राता के स्वप्न को साकार करने का बीड़ा उठाया और जन भागीदारी से सफलता हासिल की। बघुवार में वे सारी सुविधाएं है जो एक विकसित शहर में होती हैं। यहां के ग्रामीणों ने मिलकर एक ऐसे गांव का निर्माण किया जो देश के अन्य गांवों के लिए प्रेरणा स्रोत हो सकता है।

वीर वीरमदेव सोनगरा का 707वां बलिदान दिवस मनाया

जालोर के साहित्यकारों एवं प्रबुद्ध नागरिकों द्वारा अलाउद्दीन खिलजी की पुत्री का विवाह प्रस्ताव ठुकराने वाले वीर वीरमदेव सोनगरा का 707वां बलिदान दिवस जिला परिषद सभागार जालोर में समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह में इतिहासकार मधुसूदन व्यास, अचलेश्वर आनंद, भंवरसिंह सोलंकी, प्रो. अर्जुनसिंह उज्ज्वल, परमानंद भट्ट, सूर्यदेवसिंह बालोत, शिवकुमार दवे, वीरबहादुर सिंह असाड़ा, संदीप जोशी आदि ने वीरमदेव सोनगरा के उज्ज्वल चरित्र पर प्रस्तुति दी। वीरमदेव, हीरादे आदि चरित्रों को पाठ्यक्रम में शामिल करने की मांग की गई। इतिहास के गौरवशाली अध्यायों पर कहानी, कविता, नाटक आदि की रचनाकार उनके गौरव से नई पीढ़ी को अवगत करवाने के लिए अभियान चलाने की आवश्यकता जताई गई। अंत में वीरदेव जी के चित्र के आगे पुष्पांजलि अर्पित की गई। समारोह में कर्मचारी नेता एवं साहित्यकार ईश्वरलाल दवे, नाहरसिंह जाखड़ी, केशव व्यास, सुरेन्द्र नाग आदि अनेक शिक्षक, कर्मचारी, व्यापारी, वरिष्ठजन एवं विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

बीकानेर स्थापना दिवस मनाया

बीकानेर स्थापना दिवस के अवसर पर 15 अप्रेल को बीकानेर क्षत्रिय सभा के नेतृत्व में भारत विकास परिषद, प्रांतीय राजपूत सभा, पेंशनर समाज, भूतपूर्व सैनिक सेवा परिषद, सर्व हितकारिणी संस्था सहित विभिन्न संस्थाओं ने वृद्धजन भ्रमण पथ से राव बीकाजी की प्रतिमा तक रैली निकाल कर बीकानेर को स्वच्छ एवं हराभरा रखने का संदेश दिया। कीर्ति स्तम्भ के वैभव को लौटाने के लिए उसके निर्माण के लिए जन समूह को जोड़ने हेतु एक प्रपत्र का वितरण भी किया गया। रैली में सभाध्यक्ष बजरंगसिंह रॉयल, जानकीदास श्रीमाली, कानसिंह बोघेरा, डॉ. बी.के. बेनिवाल, कर्नल हेमसिंह सहित अनेक लोग शामिल हुए।

फलौदी में राव नराजी जयंती मनाई

नरावत राठौड़ों के पितृ पुरुष राव नराजी की जयंती 26 अप्रेल को फलोदी किले में पहली बार मनाई गई। समारोह को जोधपुर के पूर्व नरेश गजसिंह, संजयसिंह अमेठी, विधायक शैतानसिंह व विधायक भंवरसिंह भाटी, तारातरा महंत प्रतापपुरी, साध्वी देवा ठाकुर, हनुमानसिंह खांगटा आदि ने संबोधित किया। वक्ताओं ने फलोदी किले के संरक्षण, समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने, बालक-बालिकाओं की शिक्षा एवं सामाजिक एकजुटता व संगठन आदि विषयों पर अपनी बात कही। आयोजन समिति के मनोहर सिंह ने फलोदी शहर में राव नराजी की प्रतिमा लगाने की मांग की। कार्यक्रम में सहयोग करने वाले सहयोगियों व प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को इस अवसर पर सम्मानित किया गया। गौरवशाली इतिहास के संरक्षण एवं मजबूत भविष्य के निर्माण के संकल्प के साथ समारोह सम्पन्न हुआ। पूर्व सांसद नारायणसिंह माणकलाव, पूर्व विधायक सांगसिंह भाटी, नगरपालिका अध्यक्ष कमला थानवी, सुनीता भाटी आदि गणमान्य लोगों सहित सैंकड़ों लोग कार्यक्रम में शामिल हुए।

महाराव शेखाजी के निर्वाण दिवस पर सर्वधर्म प्रार्थना सभा

महाराव शेखा संस्थान के तत्वावधान में 18 अप्रेल (अक्षय तृतीया) को महाराव शेखाजी एवं भूतपूर्व उप राष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत के निर्वाण दिवस के अवसर पर सीकर रोड जयपुर स्थित शेखाजी सर्किल पर सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। प्रार्थना सभा में शेखाजी संस्थान, श्री क्षत्रिय युवक संघ, भवानी निकेतन शिक्षा समिति आदि संस्थाओं के प्रतिनिधि सहित समाज के गणमान्य लोगों ने सर्वधर्म सद्भाव एवं नारी स्वाभिमान की रक्षा के प्रतीक शेखाजी व भैरोंसिंह शेखावत को श्रद्धासुमन अर्पित किए। पं. राधेश्याम, डॉ. मोहम्मद इकबाल, प्रो. रहीस खान, फादर विजयपाल, गुरुदयालसिंह कोमल आदि ने अलग-अलग धर्मों में वर्णित संदेश सुनाए एवं एक ईश्वर की उपासना पर बल दिया। संस्थान की जयपुर इकाई के अध्यक्ष राजेन्द्रसिंह जेरठी ने आभार व्यक्त किया।

रघुवीरसिंह जावली स्मृति समारोह संपन्न

15 अप्रेल को आमंत्रण मेरिज गार्डन कटि घाटी अलवर में श्री आयुवान सिंह स्मृति संस्थान द्वारा आयोजित रघुवीर सिंह जावली स्मृति समारोह में बोलते हुए भंवर श्री जितेन्द्रसिंह अलवर पूर्व केन्द्रीय मंत्री ने समाज का आह्वान किया कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को आज संकल्प लेना चाहिए कि वह अपने अन्दर की एक बुराई का त्याग अभी से करेगा। उन्होंने समाज के युवाओं को प्रतिस्पर्धा के इस युग में अपने आप को प्रमाणित करने की आवश्यकता पर बल दिया। रघुवीर सिंह जावली के जीवन, उनकी प्रशासनिक क्षमता एवं राजनीतिक सूझबूझ व समाज सेवा के प्रति उनके समर्पण से भी प्रेरणा लेने की आवश्यकता को भी रेखांकित किया। उन्होंने अनेक उदाहरण देते हुए स्वर्गीय रघुवीरसिंह के जीवन के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला। वर्तमान समय में समाज एवं देश एक अत्यन्त चुनौतीपूर्ण दौर से गुजर रहा है। इन चुनौतियों का सामना बिना क्षत्रियोचित संस्कारों के विकास के संभव नहीं है। इस अवसर पर खुशवीर सिंह जोजावर, पूर्व विधायक एवं पूर्व जिला प्रमुख ने भी अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि रघुवीर सिंह जावली को अर्पित की। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि रघुवीरसिंह जावली के व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर वर्तमान व भावी पीढ़ी को अपना मार्ग प्रशस्त करने की महत्ती आवश्यकता है। देवीसिंह महार ने राजा साहब दुर्जनसिंह जावली तथा श्रीमती भटियानी, जो रघुवीर सिंह के पिता तथा माता थे, के उनके व्यक्तित्व पर प्रभाव को विस्तार से बताया। राजा साहब दुर्जनसिंह की प्रशासनिक क्षमता तथा थानेदार साहब रामसिंह भाटी, जो रघुवीर सिंह के मामा थे, की ईमानदारी व कर्तव्यनिष्ठा के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर वीरेन्द्रसिंह पूर्व विधायक गुढ़ा गौड़ जी, मेहनपाल सिंह राघव, संरक्षक महाराणा प्रताप भवन, नई दिल्ली, राधेश्याम सिंह सोम, जे.पी. ठाकुर इत्यादि गणमान्य व्यक्तियों के साथ सैंकड़ों लोग उपस्थित रहे।

डॉ. करणीसिंह की जयंती मनाई

बीकानेर के पूर्व महाराजा एवं बीकानेर लोकसभा क्षेत्र से 5 बार सांसद रहे डॉ. करणीसिंह की जयंती बीकानेर क्षत्रिय सभा सहित विभिन्न सामाजिक संगठनों एवं नगरवासियों द्वारा आदरपूर्वक मनाई गई। इस दौरान अर्जुन पुरस्कार विजेता एवं विश्व विख्यात निशानेबाज डॉ. करणीसिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर क्षत्रिय सभा के अध्यक्ष बजरंगसिंह रोयल, कर्नल शिशुपाल सिंह, डॉ. नन्दलाल सिंह आदि द्वारा प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम में कानसिंह बोघेरे, ईश्वरसिंह चनाणा, गिरिराज सिंह भाटी, जितेन्द्रसिंह राजवी आदि गणमान्य लोगों सहित नगरवासी उपस्थित रहे।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org